शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत के विभिन्न अंचलों के लोकगीत

अजय कुमार सरोज (शोधार्थी)
साहित्य विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

लोकगीत हिन्दी भाषी क्षेत्रों में आंशिक प्रचलित पश्चिम क्षेत्र में बोली जाने वाली बोलियो, भाषा वैज्ञानिकों ने चार भागों में बाँटा है। पश्चिम हिन्दी जिसके अन्तर्गत खड़ी बोली, ब्रज, वाँगरा, कन्नौजी, राजस्थानी तथा बुन्देलखण्डी भाषाएँ आती हैं। अवधी, वघेली तथा छत्तीसगढ़ी मध्य की भाषाएँ हैं। और इसके पूर्व में बिहारी भाषा समुदाय की भोजपुरी, मैथिली तथा मगही भाषाएँ हैं। उत्तर में कुमाऊँनी भाषा है। जो नैनीताल, आल्मोढा गढ़वाल, टेहरी गढ़वाल, पिथौरागढ़, चमौली तथा उत्तर काशी में बोली जाती हैं। लोकगीत चाहे कहीं से हों वे हमारे प्राचीन परम्पराओं, रीति-रिवाजों एवं धार्मिक तथा सामाजिक जीवन की संस्कृति के द्योतक हैं। लोकगीतों में प्रमुख रूप से ऋतु सम्बन्धी गीत होते हैं। संस्कार गीत और जातीय गीत मुख्य रूप से आते हैं। पद्य गाथाएँ एवं पाँरों की संख्या भी बहुत अधिक है। प्रस्तुत शोध पत्र में लोकगीतों की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

ऋतु गीतों में फाग और पावस गीत ऐसे हैं जो अनेक क्षेत्रों में गाये जाते हैं। फागगीत मुख्य रूप से बसन्त पंचमी से लेकर होलिका दहन तक गाये जाते हैं। अवधी, भोजपुरी आदि अनेक बोलियों में फाग सम्बन्धी गीत गाये जाते हैं। इनमें होली, चैताल, हेढताल, तीनताल, देहवहियां, उल्लहारा, चाहका, लेज, झूमर और कवीर आदि अनेक प्रकार हैं। संस्कार के गीतों में सोहर, मुन्हन गीत जनेऊ के गीत और विवाह के गीत प्रायः सभी स्थानों पर गाये जाते हैं।

मृत्यु के समय प्रायः प्रत्येक क्षेत्र की स्त्रियाँ राग बांध कर रोती हैं। जातीय गीतों में काफी पृथकता रहती है। किन्तु जहाँ एक ही जाति के लोग रहते हैं, वहाँ एक ही प्रकार के गीत गाये जाते हैं जैसे पावरिया जाति के लोग 'आल्हा' नट जाति के लोग 'पाँवरा' तथा अहीर जातिि के लोग विरहा आदि गीत गाते हैं।

प्रायः सभी क्षेत्रों में मातायें बच्चों को सुलाने के लिए लोरी तथा उन्हें प्रातः जगाने के लिए प्रभाती गाथा करती हैं। बालक बालिकाएँ भी कुछ खेलों में गीतों का सहारा लेते हैं। लोक प्रचलित भजन और क्षूम गीत सभी क्षेत्रों में गाये जाते हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – "लोकगीतों के माध्यम से भारत में अनेकता एकता में बंधी दिखाई देती है।"

डॉ.श्याम परमार ने लिखा है कि "यदि भारत को जानना है तो भारत के लोकगीतों से परिचित होना आवश्यक है। लोकगीत भारत की समृद्धि और संस्कार हैं।"

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आदिवासी लोक कला परिषद् के सचिव डा. कपिल तिवारी ने भारती लोकगीतों को भारत की अद्भुत देन कहा है। उन्होंने अपने निबन्धों के माध्यम से लोकगीतों का एक विस्तृत चित्र खींचा है और इन निबन्धों में लोकगीतों के विविध रूपों को रूपायित किया गया है। वर्तमान समय में शासकीय एवं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा आयोजित होने वाले उत्सवों में भारतीय लोकगीतों की जीवन्त झाँकी मिलती है। सम्पूर्ण समाज लाभान्वित होता है और भारतीय संस्कारों से परिचित होता है।

1 राजस्थानी लोकगीत

राजस्थान का लोकगीत साहित्य काफी बड़ा है। 'सोहर' कहते हैं। राजस्थानी बोली 'हातरा' के गीत को यहाँ नामक एक गीत भी गाया जाता है। 'कामड़ा' में का अर्थ है 'कामड'- जादू टोना। यह गीत उस समय गाया जाता है जब बारात विवाह के लिए घर से चलती है। राजस्थानी स्त्रियाँ कार्तिक शुक्ल पक्ष में तुलसी का त्योहार मनाती हैं। इस अवसर पर भी प्रभावी लोकगीत गाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त होली एवं प्रमुख वस्तुओ के गीत राजस्थानी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है।

2 ब्रज के लोकगीत

ब्रज मण्डल के निवासियों द्वारा गये जाने वाले गीत, भाषा और भाव की दृष्टि से अत्यन्त सरल होते हैं। जन्म के गीतों में सोहर, ननद भावज, नेग की गीत, छटी के गीतों में जलमोहन लुगरा नामक गीत प्रसिद्ध है। विवाह के गीतों में - सगायी, पीली चिट्ठी, लगुन, इसके लिए भादों की पूर्णिमा को पर्व मनाया जाता है। इसका प्रचार मण्डला, छत्तीसगढ़ और मिर्जापुर के दक्षिणी क्षेत्र में है।

भात, न्योतना, भरत न्यात, रतजगा, तेल, मडावा, विवाह का दिन, विदा देवता के गीत आदि प्रसिद्ध हैं।

3 छत्तीसगढ़ी लोकगीत

छत्तीसगढ़ी मूलतः आदिवासी बाहुल क्षेत्र है। जहाँ के लोगों का सहजता और प्रकृति से सीधा-सीधा साक्षात्कार होता है।

डा. कपिल तिवारी के अनुसार "छत्तीसगढ़ का हर कोना-कोना लोकगीतों से गुंजायमान है। छत्तीसगढ की धरती लोकगीतों की धरती है। जहाँ कि अपनी संस्कृति अपने तौर तरीके और अपने रीति-रिवाज हैं।भोजलीगीत '', दादरिया, दण्डा गीत, होली-गहिरा, वाँसगीत, पुतरा-पुतरी के गीत, झैला और सोहर के बारहमासा आदि प्रसिद्ध हैं।"

सतपुड़ा की घाटियों में गौंड जाति की थोड़ी बोली का लोक साहित्य काफी धनी है। इस बोली में गीता को वाहा और गाने के वराना कहते हैं। दादरिया, कली और सुआ इनके प्रसिद्ध लोकगीत हैं।

दादरिया:- यह श्रम गीत है। जो महुआ बीनते, लकड़ी तोड़ते या खेत-खलिहान में काम करते समय गाया जाता है। यह अकेले एवं समूह रूप से गाया जाता है। कर्मा-कर्मा गीत की उत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि प्राचीन काल में कर्मा नाम का राजा जब किसी विपत्ति में फंसा तो उसने देवताओं की मिनौती की। उसने उस समय जो गान देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गाया वही कर्मा गीत कहा जाने लगा। इसी के साथ कर्मा व्रत्थ भी होता है।

4 बन्देलखण्डी लोकगीत

जो लोकगीत उत्तर प्रदेश के झाँसी, जालौन, बाँदा, हमीरपुर आदि जिलों में तथा कुछ अंशों तक

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्वालियर, जबलपुर आदि में भी गाये जाते हैं, उन्हें बुन्देलखण्डी लोकगीत कहते हैं। फागु, विवाह सोहर, देवी गीत आदि। इन क्षेत्रों में गाये जाने वाले गीत हैं चूंकि आल्हा.-ऊदल, हवशाल, हरदौल एवं झाँसी की रानी का यह क्षेत्र रहा है। अतः लोक नायकों की लम्बी-लम्बी वीर गाथायें भी लोक गायकों द्वारा गायी जाती है। ब्रजभाषा के करीब होने के कारण सूर के वेदों का गायन भी होता है।

5 बघेली

बुन्देलखण्ड के समीपवर्ती क्षेत्र रीवा, कन्नागौद, सुहावत, कोठी तथा मैहर के आसपास बघेली लोकगीतों का क्षेत्र है। यहाँ भी भाषा का कलेवर बदल कर प्रायः वही गीत गाये जाते हैं, जो अवधी और भोजपुरी बोलियों के क्षेत्र के आसपास के हैं। बुन्देलखण्डी की तरह यहां की वीर गाथायें लोक गायकों द्वारा गायी जाती है। सोहर, विवाह गीत, पबाँरे, देवी के गीत, विदा के गीत के अतिरिक्त इस क्षेत्र का अत्यधिक सरल गीत है क्षदशा।

6 निमाड़ी लोकगीत

मध्यप्रदेश के निमाड़, धार, देवास और इन्दौर के आसपास निमाड़ी बोली बोली जाती है। निमाड़ी किसान खेत में जब हल चलता है तो गीत गाता है। मजदूर जब मिट्टी कूटता है तो भी गीत गाता है। स्त्रियाँ दही बिलोते समय भी गीत गाती हैं। चक्की के गीत, नामकररण, मुण्डन के गीत सोहर विवाह आदि सभी गीत यहां अन्य प्रदशों के समान गाये जाते हैं। इस क्षेत्र में दो गीत सर्वाधिक प्रसिद्ध है जो अन्य क्षेत्रों में भिन्न परम्परा वाले हैं।

बिहार प्रान्त के चम्पारण, दरभंगा, पूर्वी मुंगेर, भागलपुर, पश्चिमी पूर्णियाँ और मुजफ्फरपुर के पूर्वी

1 विवाह के समय गाये जाने वाले रूदन गीत, इसमें स्त्रियां पितरों को आमंत्रित करती हुई गाती हैं।

2 गंगोर गीत जो सरसता में अपना सानी नही रखते चैत्र में गाये जाते हैं

7 अवधी और भोजपुरी के गीत

अवधी और भोजपुरी के लोगों को एक साथ लिखने का कारण यह है कि दोनों बोलियों में भाषा का अन्तर तो है किन्तु रीति, रिवाजों, परम्पराओं, धर्म, जातियों एवं संस्कृति में अन्तर नहीं है। इस परम्परा में जातीय गीतों में एक गीत है विराह जिसे अहीर जाति के लोग अधिक गाते हैं। कुछ विरह लम्बे तथा कुछ छोटे होते हैं। पौराणिक आख्यानों, वीर चरित्रों पर भी विरह गाये जाते हैं। डोली ढोते समय कहारों के कहांरवी गीत भ्रम गीत का काम करते हैं और विवाह शादी तथा कुछ उत्सवों में नृत्य के साथ कहांरवा गाया जाता है।

धौंवियां के गीत, विरह से मिलते जुलते हैं।

चर्मकारों का अपना गीत चलेनी भी एक तरह से ही नृत्य गीत होता है।

नौआ झक्कड़ नाइयों के गीत को कहते हैं। मल्हैया गीत मल्लहों के द्वारा विवाह के समय गाया जाता है।

इन्हीं लोगों द्वारा होली, चैंती, कजरी गीतों का प्रचलन है। इसके अलावा नयेकवा, बंजारा, लोखिकी, विजय भल्ल तथा सोरठी आदि प्रसिद्ध गीत हैं।

8 मैथिली

भारत के ग्रामीणों द्वारा गाये जाते हैं। जनेऊ के गीत, लगन के गीत, नचारी, समुदाऊँनी, झूमर तिलहूति वर

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गमनी, भाग चेतजल मलार मनु, श्रावणी, छट के गीत, जट जाटिन और बारह मासा यहां के प्रसिद्ध लोग गीत हैं।

9 कुमाँऊनी लोकगीत

कुमाँऊनी लोकगीत मध्य हिमालय पिथौरागढ़ व उत्तरकाशी में रहने वाले पर्वतीय जातियों के गीत हैं इन गीतों को दो भागों में बांटा जा सकता है।

1 संस्कार के गीत - जो स्त्रियों द्वारा पुत्र जन्म, नामकरण, यज्ञापवीत एवं विवाह के समय गाये जाते हैं।

2 मेले त्यौहारों और ऋतुओं के गीतः- इस क्षेत्र के प्रायः सभी संस्कार शंकु नाखर गीत में आरम्भ होते हैं। इनमें गणेश, ब्रह्मा, राम तथा अन्य देवताओं के प्रार्थना गीत हैं।

कुमाँऊनी लोकगीतों में झोड़ा, पाँचरी, भगनौल और वैर प्रमुख गीत हैं। इन गीतों में सामाजिक जीवन एवं समस्याओं की विशेष चर्चा रही है।

हिन्दी के लोकगीत विशेष पहचाने बनाये हुए हैं ये भारत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

लोक नाट्य

भारत में नाट्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीनकाल से चली आ रही है। भरत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में इस विषय पर विशद् वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त धनंजय कृत दशरूपक तथा विश्वनाथ कंवि राज द्वारा रचित साहित्य दर्पण में भी नाट्य सम्बन्धी बहुत सी सामग्री उपलब्ध है। उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन के साथ लोक नाट्य की परम्परा का उदय हुआ। जिसमें रामलीला, रासलीला प्रमुख हैं।

लोक नाट्य की विशेषताएँ

लोक नाट्यों का लोक जीवन से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बंध है। यही कारण है कि लोक से सम्बन्धित उसके अवसरों तथा मांगलिक कार्यों के समय इनका अभिनय किया जाता है।

लोक नाट्यों की भाषा बड़ी सरल तथा सीधी-सादी होती है। जिसे कोई भी व्यक्ति बड़ी आसानी से समझ सकता है। जिस प्रदेश में लोक नाट्यों का अभिनय किया जाता है। नट लोग वहाँ की स्थानीय बोलियों का ही प्रयोग करते हैं।

लोक नाट्यों के संवाद बहुत छोटे तथा सरस होते हैं।

लोक नाट्यों का कथानक प्रायः ऐतिहासिक, पौराणिक या सामाजिक होता है।

धार्मिक कथा वस्तु को लेकर भी अनेक नाटक खेले जाते हैं। बंगाल के लोक नाट्य यात्रा और कीर्तन का आधार धार्मिक आख्यान होता है। राजस्थान के अमर सिंह राठौर, केरल में उत्तर भारत में 'यक्षगान' रामलीला और रासलीला आदि की पृष्ठभूमि धार्मिक नौटंकी और स्वांग की कथावस्तु समाज के "हो। अधिक सम्बन्ध रखती है।

लोक नाट्य खुले हए रंग मंच पर खेले जाते हैं। दर्शकगण मैदान में आकाश के नीचे बैठकर नाटक का अभिनय देखते हैं तथा प्रफुल्लित होते हैं। प्रायः रंगमंच पर पर्दे नहीं होते। अतः किसी दृश्य की समाप्ति पर पर्दा नहीं लिए का रहता है 'ग्रीन रूम'। इसके अभिनय में सहजता रहती है।

कुछ प्रसिद्ध लोक नाट्य

गिरता। नाटक के पात्र किसी पेड़ या दीवाल की आड में बैठकर अपना प्रसाधन किया करते हैं जो उनके

भारत के विभिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न प्रकार के लोक नाट्य प्रचलित हैं। जैसे - उत्तर भारत में रामलीला और रासलीला। मालवा में माँच, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में नौटंकी जिसे स्वांग व भगत भी कहा गया है। इस प्रदेश के पूर्वी जिलों में विदेशिया नाटक बड़ा ही लोक प्रिय है।

बंगाल की धार्मिक लोक नृत्य है। जो गम्भीर 'यात्रा' लोक नाट्य का दूसरा रूप है जो इस राज्य में प्रचलित है। महाराष्ट्र में तमाशा, ललित गोधल, बहरूपिया और दशावतार आदि लोक नाट्य, मराठी रंग मंच के आधार है। यक्षगान दक्षिण भारतीय लोक नाट्य का वह प्रकार है जो तमिल, तेलगू तथा कन्नड़ भाषी क्षेत्र की ग्रामीण जनता में प्रचलित है। यक्षमान की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इसमें गीत व संवादों का प्रयोग होता है। इसकी कथावस्तु रामायण, महाभारत और भागवत् से ली जाती है। विधि नाट्य नेतल का लोकनाटय है। इस अभिनय के द्वारा कृष्ण लीला को विधि नाटकम का विषय बनाया जाता है। इसी तरह छत्तीसगढ़ में पढ़वानी भी एक प्रसिद्ध लोक नाट्य है जो मध्यभारत की घटनाओं पर आधारित है। लोक नाट्य एक जीवन्त विद्या है जो समय-समय पर प्रदर्शित होती रहती है। भारत सरकार ने इस लोकनाट्यों को संरक्षण प्रदान किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 शर्मा बृजभूषण ; लोकगीत, टीएन भार्गव एंड संस, इलाहाबाद 1983

2 सुधाकर , पूनम ; भोजपुरी लोकगीत एक अध्ययन, कानपुर विकास प्रकाशन 2005

3 झा, मोहनानंद ; मिथिला संस्कृति परंपरा में लोकगीत,जानकी प्रकाशन पटना 1989